ISSN 2277 - 7539 (Print)
Impact Factor - 5.631 (SJIF)

Excel's International Journal of Social Science & Humanities

An International Peer Reviewed Journal

February - 2021
Vol. I No. 15

Part - II

Importance of Research in the Development of India

Issue Editor
Dr. Laxman K. Ulgade
Head of Public Administration Dept.
Havagiswami College, Udgir

Issue Editor
Dr. Nandkumar N. Kumbharikar
Public Administration Dept.
SPP College, Sirsala, Dist. Beed

EXCEL PUBLICATION HOUSE
AURANGABAD

Warpudkar (ACS) College, Sonpeth Dist. Parbhani

Index

Sr. No.	Name	Title Name	Page No.
1	प्रा. विरभद्र बिरादार	'खंजन नयन' उपन्यास में व्यक्त सामाजिक तथा राजनीतिक जीवन	4
2	डॉ. कुलकर्णी वनिता	पर्यावरण और जल समस्या	8
3	डॉ. अनिल सरगर	धुल मे सपने तलाषते झरेखा आदिवासीयों के रास्ते के बच्चों का परिस्थितीजन्य अध्ययन	12
4	*डॉ. प्रमिला डी. भोयर*	पर्यावरण और जल समस्या	17
5	डॉ. उलगडे लक्ष्मण	"माझे कुटूंब – माझी जबाबदारी" कोरोना मूक्त महाराष्ट्र मोहिम : एक प्रशासकीय अभ्यास" (15 सप्टेंबर ते 25 ऑक्टोंबर)	22
6	डॉ. दिलीप बंजारा	लोकशाही शासन व्यवस्थेत युवकांचा सहभाग	25
7	प्रा.डॉ. बिरादार प्रतिभा	भारतातील बेरोजगारी – एक समाजशास्त्रीय अभ्यास	29
8	डॉ. सुशीलप्रकाश चिमोरे	कोरोनाच्या परिणामातून जन्माला आलेली मराठी कविता	33
9	डॉ. एकंबेकर संजीव	शारीरिक, मानसिक आणि सामाजिक आरोग्याचे घटक : एक संशोधनात्मक अभ्यास	38
10	डॉ.सुवर्णा रा. गाडगे	जीवघेणी महामारी कोरोना आणि स्त्रीजीवन	44
11	प्रा. डॉ. गणेश बेळंबे	स्वराज्याच्या शिल्पकार राष्ट्रमाता जिजाऊ	49
12	डॉ.आशा गिते	जागतिक कोरोना माहामारी एक अभ्यास	57
13	प्रा. हाके एन.आर.	भारतातील नाणे बाजार आणि भांडवल बाजार प्रणाली : एक संशोधनात्मक अभ्यास	62
14	प्रा.हारकर दत्तात्रय	कॉ.गंगाधर आप्पा बुरांडे यांचे जीवनकार्य	66
15	डॉ. राजेंद्र जेऊर	नवीन कृषी कायदे आणि किमान आधारभूत किंमतीची (MSP) समस्या	69

पर्यावरण और जल समस्या

डॉ. कुलकर्णी वनिता बाबूराव
कै.रमेश वरपुड़कर महाविद्यालय, सोनपेठ.
ता.सोनपेठ जि. परभणी
पिन कोड अरे 431516
दूभाष -94 2313 8878
मेल-kulkarnivanita02@gmail.com

प्रस्तावना —

भूमि, पानी, जलवायु एवं वनस्पतियां प्रकृति की अनमोल संपदा है जिनपर प्रत्येक जीवधारी जीविकोपार्जन हेतु निर्भर है। अतः आनेवाली पीढ़ियों के लिए इन संपदाओं का संरक्षण करना परम कर्तव्य है । जल -प्रबंधन की दिशा में हमारे प्रयास अधिकतर जल- स्त्रोतों पर ही केंद्रित रहे हैं ।जल के कुशल न्यायोचित और निरंतर उपयोग पर बहुत ही कम ध्यान दिया गया है।पेयजल का समाज से कमजोर वर्गों के लिए महत्व हर स्तर पर उचित जानकारी उपलब्ध करने में सहकारी एवं किसान संगठनों की भूमिका संभावित दुष्प्रभावों के निवारण भूजल के अंधाधुंध दोहन पर अंकुश और सतही जल की गुणवत्ता ऐसे पहलू है जिन पर तत्काल ध्यान दिया जाना जरूरी है। पर्यावरण शब्द परि+ आवरण के सहयोग से बना है। 'परी' का आशय चारों ओर तथा 'वातावरण' का आशय परिवेश है। दूसरे शब्दों में कहें तो पर्यावरण अर्थात वनस्पतियों, प्राणियों और मानव जाति सहित सभी सजीवों और उनके साथ संबंधित भौतिक परिसर को पर्यावरण कहते हैं। वास्तव में पर्यावरण में वायु, जल, भूमि, पेड़-पौधे जीव -जंतु , मानव और उसकी विविध गतिविधियों के परिणाम आदि सभी का समावेश होता है। "जल की समस्या जीवन की समस्या है क्योंकि, जीवन की सुचारूता एवं अस्तित्व जल पर निर्भर है।" जल प्रदूषण की परिभाषा सीधी सी है। " जल के संगठन में जब अवांछित तत्व आ जाए या किसी वांछित घटक की अनुपातिक मात्रा अत्यंत अधिक अथवा घुलित अत्यंत कम हो जाए तो इसे जल प्रदूषण कहते हैं।"1 ऐसे परिवर्तन भौतिक , रासायनिक अथवा जैविक हो सकते हैं। जल प्रदूषण केवल जन स्वास्थ्य ही नहीं वरना प्रकृति प्राकृतिक सौंदर्य दृष्यावली एवं अन्य साधन -संसाधनों के लिए भी चिंताजनक स्थिति पैदा करते हैं।

मनुष्य की गतिविधियां ँ आजकल ऐसी चल रही है कि वह तात्कालिक लाभ के लिए वातावरण एवं प्रकृति के साथ किसी भी मूल्य पर खिलवाड़ करने पर उतारू है। वह प्रतिवर्ष विषाक्तता उत्पन्न करने वाले अनेकों तत्व बहुत अधिक मात्रा में पर्यावरण में भरता जा रहा है। वायु, जल, मिट्टी आदि सभी विषैले पदार्थों से अतृप्त प्राय: हो चुके हैं। वायुमंडल में बढ़ता हुआ धुआँ जहां एक और मानवी स्वास्थ्य को क्षीन कर रहा है, वहीं दूसरी और प्राकृतिक संतुलन भी बिगाड़ रहा है । तात्कालिक लाभ के उद्देश्य से की गई वातावरण के साथ खिलवाड़ भयावह संकट की भूमिका ही बना रही है।

पर्यावरण संरक्षण ही जल संरक्षण —

मनुष्य को स्वस्थ और सुखी रहने के लिए दो वस्तुएं ँ सबसे ज्यादा आवश्यक है, वह है शुद्ध हवा और साफ पानी। और सब कुछ साधन सुविधाएँ बाद में है । यह गौर करने वाली बात है कि जल संरक्षण का सवाल पर्यावरण के व्यापक संरक्षण के सवाल से ही जुड़ा है। हम जल के अलावा पर्यावरण के बाकी घटकों की उपेक्षा कर जल- संरक्षण पर कोई विचार-विमर्श नहीं कर सकते। शायद इसलिए आज यह समझने की आवश्यकता अधिक है कि पर्यावरण संरक्षण कोई एकांगी नहीं बल्कि बहुआयामी विचार है। आखिर हमारे पर्यावरण में जल प्राकृतिक तौर पर जल चक्र की प्रक्रिया से उपलब्ध होता है। जल चक्र जलीय परिसंचरण द्वारा निर्मित एक चक्र

Late Ramesh Warpudkar (KCS) College, Sonpeth • Dist. Parbhani

होता है। जिसके अंतर्गत जल महासागर से वायुमंडल में वायुमंडल से भूमि (भूतल) पर और भूमि से पुनः महासागर में पहुंच जाता है। महासागर से वाष्पीकरण द्वारा जल भाष्प के रूप में जल वायुमंडल में ऊपर उठता है। जहां ँ जल भाष्प के सघनन से बादल बनते हैं तथा वर्षन द्वारा जलवर्षा अथवा हिमवर्षा के रूप में जल नीचे भूतल पर आता है और नदियों से होता हुआ पुनः महासागर में पहुंँच जाता है और इस प्रकार एक जल चक्र पूरा हो जाता है। अगर गौर से देखें तो जल चक्र की इस प्रक्रिया में पर्यावरण के अन्य घटक भी शामिल होते हैं। अगर ग्लोबल वार्मिंग के चलते महासागरों के तापमान में तेजी से उतार-चढ़ाव आएगा तो स्पष्ट है जल के वाष्पन की स्वाभाविक प्रक्रिया पर उसका प्रभाव पड़ेगा। अगर धरती पर उपलब्ध जल कम होगा तो वनों के अस्तित्व के लिए खतरा होगा। कुल मिलाकर पर्यावरणीय प्रक्रियाओं में असंतुलन होने से ही उपलब्ध जल संसाधनों पर प्रभाव पड़ता है। अगर पर्यावरण का हर घटक संतुलन की प्रक्रिया में रहे तो जल प्रदूषण भी स्वंय नियंत्रित हो जाएगा।

"आज जब हमारा देश ही नहीं संपूर्ण विश्व न केवल प्रति व्यक्ति जल उपलब्धता की दृष्टि से बल्कि स्वच्छ जल के अभाव की स्थिति से गुजर रहा है, ऐसे में आम आदमी को जल के दुरुपयोग के प्रति संवेदनशील करने की जरूरत है ताकि पानी की बचत हो और उसे व्यर्थ होने से बचाया जा सके। साथ ही, जल प्रबंधन की तरफ विशेष ध्यान देना समय की मांग है। वर्षा के जल को व्यर्थ बहने से बचाने के लिए परंपरागत जल स्रोतों के महत्व पर दोबारा ध्यान देकर सिंचाईं व्यवस्था को नया जीवन दिया जा सकता है।2

जल जीवन है —

कहीं उडतेके बादलों के रूप में, कहीं लहराते सागर के रूप में तो कहीं हिम शिखरों पर जमी बर्फ के रूप में पृथ्वी पर जल उपलब्ध है, किंतु पृथ्वी पर जल की कुल मात्रा स्थिर और सीमित है। जल जीवन का आधार है। जल द्वारा ही भोजन के पोषक तत्वों को कोशिकाओं तक पहुंचाया जाता है और अपशिष्ट पदार्थ विसर्जित होकर शरीर से बाहर निकलते हैं। मनुष्य के शरीर में मौजूद जल पाचन संस्थान को स्निग्धता प्रदान करता है। शरीर का पानी दो भागों में बटा होता है: को सीय जल तथा बाह्यकोशिय जल घुलनशीलता पानी का सर्वाधिक महत्वपूर्ण गुण है। इसी के माध्यम से यह रासायनिक उतार-चढ़ाव को संतुलित बनाए रखता है। उसी से ऊष्मा नियंत्रित रहती है तथा शरीर की क्षमता रुककर शरीर का तापमान सामान्य बना रहता है। जिस प्रकार मिट्टी एक संसाधन है, उसमें आत्मा नहीं है, किंतु उपयोग की चीज है और मानव जीवन के निर्वाह में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। उसी प्रकार जल भी एक संसाधन है, उसमें आत्मा नहीं है और यह उपयोग की वस्तु है। जल ही जीवन है और यह प्रकृति का एक अहम भाग है। मनुष्य को जल के साथ तालमेल बैठाकर चलना होगा, जल का दोहन करें लेकिन सम्मान के साथ।

जलागम विकास हेतु ध्यान देने योग्य बातें —

1) जमीन के भीतर पानी का संग्रह।
2) जमीन के ऊपर पानी का संग्रह।
3) रोके गए पानी का समुचित रूप से संचालन
4) नए बांध के काम में पानी के संग्रहण को लिया जाना चाहिए।
5) भूगर्भ जल के उपयोग का नियम बनाना चाहिए।
6) जल संरक्षण की प्रवृत्ति के लिए जागृति लानी चाहिए।
7) पर्यावरण संतुलन के लिए लोगों में चेतना जागृत करनी चाहिए।

पर्यावरण प्रदूषण की प्रमुख समस्याएं—

इंधन जलने, औद्योगिक कल -कारखानों से धुआं ँ निकलने और विभिन्न कारणों से वातावरण -प्रदूषण की आजकल बड़ी चर्चा है। सामान्य कारणों से उत्पन्न होने वाला प्रदूषण यो तो प्रकृति अपने आप ही शुद्ध करती है, पर उस शुद्धि चक्र में मानव निर्मित एक व्यवधान उत्पन्न हो गया है। इसके कई कारण गिनाए जाते हैं। जिनमें तीन प्रमुख है। पहला तो यह कि आजकल रेल, मोटरों और

Dist. Parbhani

कल -कारखानों में ज्वलनसील ईंधन जलाया जाता है। जैसे पेट्रोल मोबिल आयल, डीजल आदि। इन रासायनिक ईंधन के जलने से कई तरह की गैसे निकलती है जो वायुमंडल में घुलकर वातावरण को दूषित करती है।

दूसरा कारण रासायनिक मिश्रण का मिश्रण का उपयोग है दवायें कीटाणुनाशक रसायन रासायनिक खाद जैसी वस्तुओं का इस्तेमाल तत्काल भले ही कोई लाभ दर्शाता हो पर वे उपयोग के बाद संपर्क में आने वाली वस्तुओं का प्रत्येक कन विषाक्त कर देती है। यह विषाक्तता भी अपना प्रभाव वातावरण पर डालती है।

तीसरा बड़ा कारण जनसंख्या वृद्धि "न्यूक्लियर रिएक्टर बढ़ी हुई जनसंख्या उनके द्वारा स्वास्थ्य- प्रश्वास में छोड़ी गई कार्बन डाइऑक्साइड तथा परमाणु परीक्षणों के कारण वातावरण में उत्पन्न हुई हलचल पर्यावरण को दूषित करती है।3 इन कारणों के साथ और भी अनेक कारण है जो वातावरण को दूषित करते हैं।

भारत की पर्यावरणीय समस्याओं में विभिन्न प्राकृतिक खतरे विशेष रूप से चक्रवात और वार्षिक मानसून, बाढ़, जनसंख्या वृद्धि ,बढ़ती हुई व्यक्तिगत खपत, द्योगिकरण, ढांचागत विकास, घटिया कृषि पद्धतियां और संसाधनों का असमान वितरण है। और इनके कारण भारत के प्राकृतिक वातावरण में अत्याधिक अमानवीय परिवर्तन हो रहा है। "वनों की कटाई इंधन के लिए लकड़ी और कृषि भूमि के विस्तार के लिए हो रही है। यह प्रचलन औद्योगिक और मोटर वाहन प्रदूषण के साथ मिलकर वातावरण का तापमान बढ़ा देता है जिसकी वजह से वर्षन का स्वरूप बदल जाता है, और अकाल की आवृत्ति बढ़ जाती है।"4

पर्यावरण और जल समस्या —

परिवेश प्रदूषण केवल पृथ्वी पर ही होता हो ऐसी बात नहीं है। नदियों, तालाबों, झीलों और समुद्रों का पानी भी अशुद्ध होता जा रहा है। जल पौधों द्वारा समुद्र में विसर्जित किया हुआ गंदा तेल नदियों में बहायी गयी कल- कारखानों से निकली व्यर्थ चीजें और गंदगी नदियों और समुद्र के पानी को बड़े भीषण रूप से दूषित कर देती है। और बड़े शहरों और महानगरों में लगे औद्योगिक प्रतिष्ठानों को तो अपनी गंदगी बहाने का सर्वोत्तम स्थान पास बहने वाली नदियां ँ ही दिख पड़ती है। उनकी गंदगी नदियों के पानी को इस तरह खराब कर देती है कि वह पानी उपयोग में आने जैसा रह ही नहीं जाता। कुछ दू बहकर गंदगी पानी के साथ मिलकर बहुत कुछ वैसी ही हो जाती है। जैसा कि नदी का जल रहता है और आगे नदी के किनारे पर बसने वाले गांवों या नगरों के निवासी उसी जल का प्रयोग करते हैं। प्राकृतिक रूप से जल प्रदूषण जल में भू क्षरण खनिज पदार्थ पौधों की पत्तियों एवं ह्यूमस् पदार्थ तथा प्राणियों के मल मूत्र आदि मिलने के कारण होता है। जल जिस भूमि पर एकत्रित रहता है, यदि वहां की भूमि में खनिजों की मात्रा अधिक होती है, तो वह भी जल में मिल जाते हैं। "इनमें आर्सेनिक, सीसा, कैडमियम एवं पारा आदी जिन्हें विषैले पदार्थ कहा जाता है, यदि इनकी मात्रा अनुकूलतम आद्रता से अधिक हो जाती है यों ये हानिकारक हो जाता है।"5 प्रदूषण जल वायु को भी असामान्य रूप से प्रभावित करता है। रूतु वैज्ञानिकों का मत है कि, " इन दिनों मौसम में गंभीर परिवर्तन अनुभव किए जा रहे हैं। परिवेश का दुश्मन उसका एक बहुत बड़ा कारण है"। 6 जन सामान्य भी मौसम को स्थाई और अनिश्चित अनुभव करता है। कब बारिश हो जाए कुछ ठीक पता नहीं निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता कि गर्मी का मौसम गर्मी की तरह ही बीतेगा और यह भी निश्चित नहीं है कि वर्षा ऋतु में पानी गिरेगा ही। कभी गर्मी के के दिन भी बारिश की तरह लगते हैं, तो कभी वर्षा भी गर्मी की भां ँति ही बीत जाती है, प्रकृति अपना चक्र बदल रही है, यह कहने की अपेक्षा यह कहना ज्यादा ठीक होगा कि हम प्रकृति को अपनी नियति बदलने के लिए बाध्य कर रहे हैं।

सृष्टि की रचना से पता चलता है कि "भूमंडल में 75% पानी है और शेष 25% भाग जमीन है। मनुष्य को यह गुमान है कि हमारे पास 75% जल है। हमें पानी की क्या कमी हो सकती है, और इसी कारण मनुष्य बेइंतहा पानी की बर्बादी कर रहा है। उसे यह शायद ही पता है कि, कुल जल का केवल 1% जल को शुद्ध और सुरक्षित रखना प्रत्येक मानव का अनिवार्य कर्तव्य होना चाहिए, अन्यथा एक दिन ऐसा आएगा एक -एक बूं ँद पानी के लिए तरसेंगे"। 7 मौसम वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भारत में काफी पर्याप्त वर्षा होती है ,परंतु हम वर्षा काल का पर्याप्त भंडारण एवं सदुपयोग करने में पूर्णतया सक्षम नहीं है, इसके कुछ प्राकृतिक कारण भी रहे हैं।

भविष्य में विकास कार्यों में वर्तमान से दुगना जल लगेगा ऐसा अनुमान है। जरूरी है कि जल की कमी को पूरा करने हेतु जल संरक्षण एवं संसाधन प्रबंधन के प्रभावी कदम उठाए जाएं जल जो कि विकास का मूल है, तेजी से दुर्लभ होता जा रहा है। जल के संरक्षण भी वैज्ञानिक विधियों और आधुनिक तकनीकों की आवश्यकता पर अधिक महत्व की जरूरत है ताकि जल के सक्षम उपयोग के लिए सतत शैक्षिक अभियान चलाया जा सके साथ ही साथ जल- संसाधन नीति को राष्ट्रीय एवं पर्यावरण सम्मत होना चाहिए। हमारे हाथों में अब न केवल अपना बल्कि उन सभी जीवित प्राणियों का भविष्य है जिनके साथ हम पृथ्वी पर रहते हैं। अपनी अमूल्य प्राकृतिक विरासत की रक्षा के लिए हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि जल- संकट का समाधान जल के संरक्षण से ही है।

सांराश-

प्रकृति अपने सुनियोजित तंत्र द्वारा अपनी सुव्यवस्था करने में सक्षम है। अधमता व अव्यवस्था तब उत्पन्न होती है, जब मनुष्य अपने स्वार्थ पूर्ति हेतु उससे अनावश्यक छेड़छाड़ करता है। किसी सीमा तक तो इस छेड़खानी के कारण तंत्र अपने को ज्यों-त्यों किसी तरह बनाए रहता है, पर जब वह हद से ज्यादा बढ़ जाती है तो उसकी वह सुव्यवस्थित प्रणाली टूट जाती है, जिससे मनुष्य समेत सभी को उसका खामियाजा भुगतना पड़ता है। मनुष्य बुद्धिमान प्राणी है, पर जब वह बुद्धि स्वार्थ- साधनों में लगती है, तो संकट खड़े करती है और ऐसा दृश्य उपस्थित करती है जैसा इन दिनों प्रकृति- असंतुलन पर्यावरण प्रदूषण के रूप में समस्त विश्व में दृश्यमान हो रहा है। समझदारी इसी में है कि जिस डाल पर खड़े हैं, उसी को काट गिराने का आत्मघाती कदम न उठाकर विवेकशीलता का परिचय दें। अपना और समाज का इसी में भला है, इस तथ्य को भली-भां ँति समझा जाना चाहिए।

संदर्भ सूची :

1) hamare - jala - san - पृष्ठ 078
2) कुरुक्षेत्र - जून 2004 - पृष्ठ 05
3) युग परिवर्तन कैसे और कब - पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य वांग्मय - पृष्ठ 2.118
4) m.dailyhunt. in>news>nepal >hindi
5) कुरुक्षेत्र - जून 2004 -पृष्ठ - 8
6) युग परिवर्तन कैसे और कब - पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य वांग्मय - पृष्ठ 2. 119
7) haare - jala - san - पृष्ठ 26

PRINCIPAL
Late Ramesh Warpudkar (ACS)
College, Sonpeth Dist. Parbhani